नाटक एवं सट्टक साहित्य का इतिहास

इकाई 3 सट्टक की प्रमुख विशेषताएँ एवं नाटिका से अन्तर

Q-1 सट्टक के परीभाष देते हुए सट्टक की प्रमुख विशेषताएँ लिखें ?

Ans— कविराज राजशेखर ने कर्पूरमंजरी नामक सट्टक में परिभाषा देते हुए स्वंय लिखे है- कि
सो सट्टओत्ति भण्इ दूरं जो णाडिआइ अणुहरइ।
कि उण एत्थ पवेसअ - विक्कंभाइ ण केवलं होती॥

अर्थात : सट्टक उसे कहते है जिसकी रचना नाटिका के अनुरूप की जाती है परन्तु सट्टक में नाटिका के समान प्रवेशक और विष्कम्भक का सर्वथा अभाव होता है। नाटिक की कथा काल्पनिक होती है उसी प्रकार सट्टक की कथा भी कल्पनायुक्त होती है। नायक प्रख्यात धीर ललित राजा होता है शृङ्गाररस प्रधान होता है। मुख्यत कथानक प्रेम से भरे रहता है नायक राजा होता है रानी गम्भीर उदारचित्तवाली होती है नवीन नायिका कोई राजकुमारी होती है जो स्वभाव से सरल परम सुन्दरी और मुग्ध होती है।

सट्टक की प्रमुख विशेषताएँ है जो इस प्रकार के है।

1 — चार जवनिकाएँ होती है।

2 कथावस्तु कल्पित होती है और सट्टक का नामकरण नायिका के नाम पर होता है।

(3) प्रवेश और विष्कम्भक का अभाव रहता है।

(4) अद्भुत रस प्राधान्य रहता है।

(5) नायक धीर ललित होता है।

(6) पटरानी गम्भीर और मानिनी होती है। इन का नायक के ऊपर पूर्ण शासन रहता है।

(7) नायक अन्य नायिका से प्रेम करता है, पर यही उस प्रेम में बाधक बनती है। अन्त मे उसी की सहमति से दोनों प्रणय-व्यापार सम्पन्न होता है।

(8) स्त्री-पात्रों की बहुलता होती है।

(9) प्राकृत भाषा का आद्योपान्त प्रयोग किया जाता है।

(10) कैशिकी वृत्ति के चारो अंगों द्वारा चार जवनिकाओं का गठन किया जाता है।

(11) नृत्य की प्रधानता रहती है।

(12) श्रृंगार का खुल कर वर्णन किया जाता है।

(13) अन्त मे आश्चर्यजनक दृश्यों की योजना अवश्य की जाती है।

Scanned with CamScanner